Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVII, Jan-2015, ISSN 2230-7540

आपदा प्रबन्धनः मुद्दे और चुनौत्तियाँ

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVII, January-2015, ISSN 2230-7540

आपदा प्रबन्धनः मुद्दे और चुनौत्तियाँ

Dr. Nitu Sharma*

Assistant Lecturer in Commerce, Government College, Satnali

साराश – आज के समय में वैश्विक उष्मण और अन्य कारणों से पृथ्वी पर आपदा की प्रवृति तथा आपदा में प्रबलता बढ़ी है। आपदा की मार सबसे भंयकर होती है इसमें जान और माल की सबसे ज्यादा हानि होती है। आपदा आती थोडे समय के लिए है परन्तु इसका प्रभाव लम्बी अवधि तक रहता है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि आपदा आने पर हम किस प्रकार से बच सकते और दूसरो की भी जान बचा सकते है। कुछ देश कार्बन उत्सर्जन को कम करने तथा वैश्विक उष्मण के प्रभाव को कम करने के प्रयास कर रहे है, हालांकि इन प्रयासो का कोई विशेष प्रभाव नही पडा है। हाल के दशको में, हाइड्रोलोजिकल आपदा सूचना की संख्या में औसतन प्रतिवर्श 7.4 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है। भारत में आपदाएं अलग–अलग क्षेत्र में अलग–अलग तरह की होती है। पहाडी क्षेत्र में भूकम्प तथा भूस्खलन, मैदानी क्षेत्र में बाढ़, रेगिस्तान क्षेत्र में सूखा, तटीय क्षेत्र में चक्रवात व तूफान आदि आपदा से प्रभावित होते है। वातावरण में बदलाव ,पन मौसम आपदा, जल सम्बन्धी आपदा तथा भूवैज्ञानिक आपदाओ में भी वृद्धि हो रही है। इन आपदाओं की वृद्धि के कारण इन आपदाओ से सामना करने के लिए हमें प्रशिक्षण, जागरूकता, इन आपदाओं से सामना करने के तरीको की जानकारी, आपदा से प्रभावित क्षेत्र के पुर्नउत्थान के तरीके, धन की उपलब्धता करवाना आदि की जानकारी अधिक आवश्यक है। इन आपदाओं से सामना करने की जिम्मेदारी को निभाने में बहुत सी मुश्किले जैसे जनसंख्या वृद्धि, वातावरण में बदलाव, सभी पक्षो को सूचित करना, आपदा की सही समय पर सूचना, आपदा से बचाव के तरीके आदि ये सभी बाते हम पर दबाव डालती है कि हमें विचारधारा, नीतियों, विधान आदि में बदलाव लाने की जरूरत है।

मुख्य शब्द – आपदा प्रबन्धनः मुद्दे और चुनौत्तियां

----------X----------

आपदा प्रबन्धन

आपदा एक असामान्य घटना हो सकती है जो थोडे समय के लिए आती है और अपने विनाश के चिन्ह लम्बे समय के लिए छोड जाती है। आपदाएं तो प्राचीन काल से ही आती रही होगी उस समय प्राकृतिक संकेतो के माध्यम से ही जानकारी प्राप्त करते थे परन्तु आज के प्रगतिशील मानव ने इन आपदाओं के प्रकार, इन आपदाओं के आने की संभावना की सटीक, सही समय पर जानकारी, इन आपदाओ से निपटने के तरीके आदि के लिए आपदा प्रबन्धन की आवश्यकता हुइ। आपदा प्रबन्धन में जान और माल की कम से कम हानि हो इसके लिए प्रयास किये जाते है।

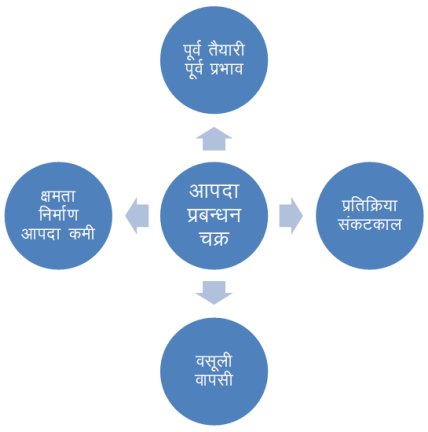

आपदा प्रबन्धन प्रवाह चक्र

आपदा प्राकृतिक आपदा या मानव जनित आपदा हो सकती है। प्राकृतिक आपदा कई प्रकार से हो सकती है जैसे हरिकेन, सुनामी, सुखा, बाढ, टायफून, बवंडर, चक्रवात ये आपदा मौसम से सम्बन्धित है। भूस्खलन और अवधाव या हिमघाव या बर्फ की सरकती हुई चटटान ये एसी प्राकृतिक आपदा है जिसमें भूमि की स्थलाकृति बदल जाती है। भूकम्प और ज्वालामुखी में या ज्वालामुखी के कारण अग्निकांड, दावानल टेक्टोनिक प्लेट के कारण आते है। टीडीदल का हमला कीटो का प्रकोप अग्निकांड को भी प्राकृतिक आपदा माना गया है। ज्वालामुखी, भूकम्प, सुनामी, भूस्खलन ये सब द्रीव आपदा है। जबकि सूखा, कीटो का प्रकोप, अग्निकाडं आदि मंदगामी आपदाए है। मानव जनित आपदाएं वे है जो मानवीय क्रियाकलापो से होती है। मानवीय दखल से नई प्रकार की आपदा ने जन्म दिया है जिसका नाम है ग्लोबल वार्मिग। औद्योगिक क्रियाकलाप, जनसंख्या वृद्धि और प्रकृति के साथ खिलवाड ने ग्लोबल वार्मिगं को बढा दिया है।

कुछ अति विनाशकारी प्राकृतिक आपदाएं ऐसी थी जिन का जिक्र यहां करना जरूरी है जिस के बाद इस अवधारणा ने जन्म लिया की आपदा प्रबन्धन की आवश्यकता क्यू है। 1995 की सुनामी, भारत इरान और तुर्की के भंयकर भूकम्प, न्यू इंग्लैण्ड व क्युबेक के बर्फीले तूफान आदि त्रासदियो ने आपदा प्रबन्धन की आवश्यकता को बताया।

www.ignited.in

आपदा प्रबंधन के अंतर्गत ही सबसे बडा कदम जो उठाया गया कि एसी तकनीके विकसित करने पर जोर दिया गया कि आपदा की किसी तरह भविष्यवाणी की जा सके। इस उददेश्य में अंतरिक्ष विज्ञान से बहुत कामयाबी मिली उपग्रहो की मदद से बवंडर, चक्रवात की सटीक भविष्यवाणी कर के कई बार लाखो लोगो की जानमाल की हानि को बचाया जा सका है। अब तकनीको की मददसे यह प्रयास जारी है कि किसी तरह भूकम्प व सुनामी की भी भविष्यवाणी की जा सके इसके लिए पालतू व अन्य जन्तआं के व्यवहार परिवर्तन को भी वैज्ञानिक गौर कर रहे है। भूकम्प जैसी आपदा के समय एल पी जी रिसाव आग जैसी दुर्घटना को जन्म देता है विधुत सप्लाई कट जाती है, जलापुर्ति बंद हो जाती है, जलापुर्ति की घरेलु कनेक्शन पाईप टूट जाने से टैंक का पानी बह जाता है, खादय पदार्थ नष्ट हो जाते है, लोग मलबे में दब जाते है, सडके मलबे से अट जाती है, सहायता देर से पहुंचती है, दोबारा भूकम्प आने का मन में भय बना रहता है, पीने के स्वच्छ पानी का अभाव, कुछ लोग मलबे में से माल तलाश करके लूट–पाट को भडावा देते है, मृतको की बदबू और महामारी फैल जाती है, सुरक्षित आश्रय नही बचता, लोग सहायता सामग्री लूट सकते है,जमाखोरी बढ जाती है आदि अनेक समस्याए आती है। एसी परिस्थितियां से निपटने के लिए ही आपदा प्रबन्धन सीखना अति आवश्यक है यह तो बकायदा अनिवार्य पाठयक्रम होना चाहिए और प्रत्येक नागरिक के लिए इसका प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

आपदा से अभिप्राय प्राकृतिक अथवा मानव जन्य कारणो से आने वाली किसी ऐसी विपत्ति, दुर्घटना, अनिष्ट और गंभीर घटना से है जिसका प्रभाव समुदाय की सहन क्षमता से परे है। आपदा प्रबन्धन में प्रक्रिया को हम तीन मुख्य भागो में विभाजित कर सकते है पहला संभावित आपदा आने से पहले की कार्यवाहियां दूसरा आपदा के समय तुरंत की जाने वाली कार्यवाही आपदा के आने के बाद की जाने वाली कार्यवाही। आपदा आने से पहले संभावित आपदा को नई तकरीको के साथ सभी लागो तक जानकारी पंहुचाना। इसमें आपदा आने से पहले के बचाव की जानकारी आपदा से निपटने के लिए जो तरीका सही उस की जानकारी, आपदा से निपटने के लिए लागो को पहले से शिक्षा प्रदान की जा सकती है। आपदा आने पर किस तरह से जान व माल को बचाया जा सके इसमें त्वरित कार्यवाही आती है। सभी लागो को आपदा के आने के समय की जानकारी, आपदा के खतरे के बारे में जानकारी कि आपदा कितनी खतरनाक होने के संभावना है लोगो को सुरक्षित स्थान पर संभव हो आपदा आने से पहले पहुंचाना आदि कार्यवाही आती है आपदा आने के बाद में लोगो को मुख्य धारा में लाने में सहायता करने से सम्बन्धित कार्यवाही आदि शामिल की जा सकती है।

भारत में अनेक प्रकार की आपदाऐ अलग–अलग क्षेत्रों में आती है। भारत में पहाडी क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा के कारण बादल फटना, लैण्डस्लाइव, भूकम्प आदि जैसी आपदा की संभावना रहती है, मैदानी इलाकों में चक्रवाती तुफान, बाढ सूखा आदि आपदाए आने की संभावना होती है संमुन्द्र के आस पास सुनामी या चक्रवाती तूफान आदि की संभावना रहती है जबकि रेगिस्तान में सूखा की संभावना रहती है। भारत में प्रत्येक वर्ष कोई न कोई आपदा आती रहती है।

स्त्रोत : गूगल इमेजिज

शोध बताते है कि हाल के समय में ग्लोबल वार्मिग तेजी से बढी है जिसके कारण आपदा में आने वाली प्रवृति में तेजी आई है। कुछ देश कार्बन उत्सर्जन को कम करने तथा वैश्विक उष्मण के प्रभाव को कम करने के प्रयास कर रहे है, हालांकि इन प्रयासो का कोई विशेष प्रभाव नही पडा है। हाल के दशको में, हाइड्रोलोजिकल आपदा सूचना की संख्या में औसतन प्रतिवर्ष 7.4 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है।

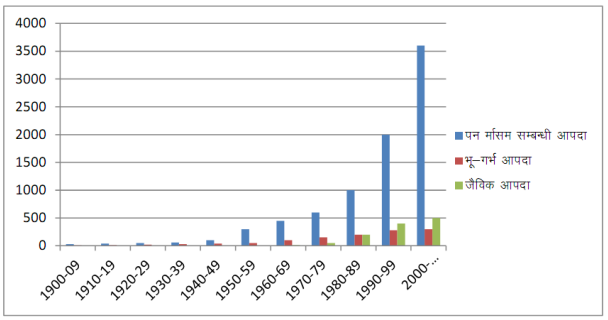

स्त्रोत : आपदा प्रबन्धन, गृह मंत्रालय

नीचे दर्शायी गई तालिका से जान व माल की हानि का पता चलता है।

प्राकृतिक कहर संख्या में 2001–02 से लेकर 2012–13 तक

वर्ष	जान माल की हानि (संख्या में)	पशुधन की हानि (संख्या में)	मकान की हानि (संख्या में)	प्रभावित फसल का क्षेत्र (लाख हैक्टेयर में)
2001–02	834	21269	3,46878	18.72
2002–03	898	3729	462700	21
2003–04	1992	25393	682209	31.98
2004–05	1995	12389	1603300	32.53
2005–06	2698	110997	2120012	35.52
2006–07	2402	455619	1934680	70.87
2007–08	3764	119218	3527041	85.13
2008–09	3405	53833	1646905	35.56
2009–10	1677	128452	1359726	47.13
2010–11	2310	48778	1338619	46.25
2011–12	1600	9126	876168	18.67
2012–13	948	24360	671761	15.34

निष्कर्ष :

भारत में आपदाएं अलग–अलग क्षेत्र में अलग–अलग तरह की होती है। पहाडी क्षेत्र में भूकम्प तथा भूस्खलन, मैदानी क्षेत्र में बाढ़, रेगिस्तान क्षेत्र में सूखा, तटीय क्षेत्र में चक्रवात व तूफान आदि आपदा से प्रभावित होते है। वातावरण में बदलाव ,पन मौसम आपदा, जल सम्बन्धी आपदा तथा भूवैज्ञानिक आपदाओ में भी वृद्धि हो रही है। इन आपदाओं की वृद्धि के कारण इन आपदाओ से सामना करने के लिए हमें प्रशिक्षण, जागरूकता, इन आपदाओं से सामना करने के तरीको की जानकारी, आपदा से प्रभावित क्षेत्र के पुर्नउत्थान के तरीके, धन की उपलब्धता करवाना आदि की जानकारी अधिक आवश्यक है। इन आपदाओं से सामना करने की जिम्मेदारी को निभाने में बहुत सी मुश्किले जैसे जनसंख्या वृद्धि, वातावरण में बदलाव, सभी पक्षो को सूचित करना, आपदा की सही समय पर सूचना, आपदा से बचाव के तरीके आदि ये सभी बाते हम पर दबाव डालती है कि हमें विचारधारा, नीतियों, विधान आदि में बदलाव लाने की जरूरत है।

संदर्भ सूची:

www.nbr.org.org/publications/element.aspx

www.kk.sciencedarshan.in/2011/04/disaster-management.html

www.google.co.in

www.data.gov.in

Corresponding Author

Dr. Nitu Sharma*

Assistant Lecturer in Commerce, Government College, Satnali

E-Mail – neetusharma556@gmail.com